International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 34-36

प्रो0 हरिशंकर आदेश के काव्य में प्रेमाभिव्यक्ति

आशा रानी

असिस्टैंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), वैश्य पी.जी. कॉलेज, भिवानी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। संसार में समाज का विशेष महत्त्व है। प्रेम के बिना समाज का अस्तित्व नहीं है। प्रेम के बिना सारा संसार नीरस प्रतीत होता है। प्रकृति की गतिशीलता भी प्रेम पर आधारित है। स्थावर–जंगम व समस्त सांसारिक जीव–जन्तु, प्राणी व मनुष्य सभी प्रेमाश्रित हैं। सभी प्राणियों की मूलवृत्ति प्रेम है। काव्य प्रेम को अद्‌भुत छटा प्रदान करता है।

1. प्रकृति प्रेम

प्रकृति की सुन्दरता मनुष्य को आदिकाल से आकर्षित करती रही है। प्रकृति की छटा से कवि का आकर्षित होना स्वाभाविक है। प्रकृति के फूल और काँटे मनुष्य के सुख–दुःख का अहसास कराते रहते हैं।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन अनुकरणीय है :–
''प्रकृति हमारे सामने आती है – कहीं बेडौल मधु सज्जित या सुन्दर रूप में, कहीं उग्र रूप में, कराल और भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उनके इन सब रूप में लीन होता है।''[1]
प्रो. हरिशंकर आदेश ने अपने काव्य में प्रकृति के प्रति सच्चा प्रेम प्रदर्शित किया तथा साथ ही अनुकूल–प्रतिकूल, चर–अचर, जड़–चेतन, मंगलकारी एवं अमंगलकारी के सजीव दृश्यों का मनोहारी रूप प्रस्तुत किया है। भारत की अनुपम छटा पर कवि विमुग्ध है। प्रो. आदेश अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं :–

''विल्व–विटप, अशोक तरु पीपल दूर्वा–तुलसी दल, गंगा जल,
मधुर आम का बौर नहीं है।''[2]

महाकवि आदेश ने अपने काव्य में पीपल और तुलसी, जो कि भारतीय संस्कृति के परिचायक एवं आधार हैं, के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। प्रकृति की अद्वितीय शक्ति का वर्णन करके आह्लादित होते हैं। भारत की गौरव–गाथा के प्रदर्शन का भी प्रयास किया है। प्रकृति का सुन्दर, सुरभ्य एवं रमणीय वर्णन किया है।
'जयहिन्द' कविता में आस्था और विश्वास का सेतु लहराता रहता है–

''दिशा–दिशा से छूट रही है, ध्वनि अपार जयहिन्द की।
पत्थर पत्थर बना पशुपति, पत्ता–पत्ता शूल है।
लहर–लहर बन गई लक्ष्मी, तृण–तृण बना त्रिशूल है।
कली–कली बन गई कलिका सुन–सुन तान मिलिन्द की।''[3]

फलों का राजा आम सभी जगह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक उपयोगी है। अपनी अनुपम मिठास के द्वारा प्रकृति के सौन्दर्य को चार चाँद लगा देता है। स्वास्थ्य के लिए अति उपयोगी है। आम का नाम लेते ही अनायास मुँह से लार टपकने लगती है। अतः कवि आम के बारे में विचारं अभिव्यक्त करता हुआ कहता हैः–

''फल आम जहाँ भी जाता है, संज्ञा को बदल न पाता है।
हर देश–काल औ, पीढ़ी में ही आम आम कहलाता है।
रस और स्वाद बदले न कभी छवि–आकृति बदल न पाती है।''[4]

पतित पावनी गंगा की याद में कवि बेचैन हो उठता है। प्राकृतिक सुन्दरता एवं रमणीयता अद्वितीय है। कल–कल बहती गंगा सभी के मन को आकर्षित करती है। यह हमारे देश की रीढ़ की हड्डी है। इसी गंगा के पानी से हमारी भूमि शस्य श्यामला एवं उर्वरा है। यह भारत के लिए वरदान से कम नहीं है। गंगा की अजस्र बहती धारा धन–धान्य से परिपूर्ण करती है। भागीरथी की लहरों को काव्य में प्रस्तुत कर अनेक पूत संदर्भों से मानव–मन को आदर्श भाव समन्वित किया हैः

''तू हरि के चरणों से निकली शिव की शीर्ष जटा में मचली उच्च
हिमालय की बेटी तू, गंगोत्री का प्यार।
भगीरथ की सफल साध तू देवों का अनुपम निनाद तू सगर सुतों
का किया नर्क से, तूने ही निस्तार।''[5]

इस प्रकार से प्रकृति का सुन्दर चरित्र–चित्रण किया गया है। प्रो. आदेश के काव्य में भारत की सुरभ्य एवं रमणीय प्रकृति का आकर्षक–मनमोहक विस्तृत विवरण किया गया है। प्रकृति ने भारत देश पर अनुपम प्रेम प्रदर्शित किया है।

2. मानवीय प्रेम

'मनुर्भव' अर्थात् अच्छे इंसान बनाने के लिए सद्‌गुणों की आवश्यकता होती है। प्रेम के कारण मनुष्य समाज में आदर को प्राप्त करता है। परिवार और समाज को प्रेम भाव के द्वारा ही एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। भारत का मानव प्रेम जगप्रसिद्ध है।
कवि अपनी उन्नति को वात्सल्यमयी माँ की देन समझता है। माँ की ममता अपनी सन्तान के लिए क्या–क्या नहीं करती है। वह सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहती है। सभी प्रकार दुःखों को सहन करके अपनी सन्तान को सुखी बनाने का यत्न करती है। प्रो. आदेश ने अपने मुक्त कण्ठ से उसके प्रेम की प्रशंसा की है :–

''माँ का प्यार न बदले जग में, समय बदल जाता है।
उगता है डर सूर्य पुनः जो सायं ढल जाता है।
कोई कितना करे सम्मिश्रण कितनी प्रलय मचाये।
पीढ़ी–दर–पीढ़ी दुनिया में खून रंग जाता है।''[6]

जहाँ माँ–बाप का प्यार बच्चों को प्राप्त होता है तो बच्चों का भविष्य ही बदल जाता है। भारतीय आँगन में मानवीय सम्बन्धों की सुन्दर संरचना देखने को मिलती है। भारत के अतिरिक्त किसी भी देश में ऐसे मानवीय सम्बन्ध नहीं मिलते हैं। इसीलिए हमारी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में सम्मान को प्राप्त होती है।
प्रो. आदेश के शब्दों मेंः–

''जहाँ मिली थी माँ की ममता प्यार पिता का पाया,
जहाँ भाई–बहनों ने मुझ पर निज नेह लुटाया।
जहाँ मिली थी मुझे प्रणय की, विधिवत् निर्मल गंगा,
जहाँ खिला मेरे जीवन का इन्द्र धनुष सतरंगा।''[7]

जहाँ मानवीय सम्बन्धों का विच्छेद हुआ उसका परिणाम बिल्कुल विपरीत हुआ। स्वार्थ ने मानवीय प्रेम को तार–तार कर दिया।

चारित्रिक दोष के कारण परिवारों एवं समाज विघटन अनिवार्य हो गया। वहाँ से नैतिकता, सहिष्णुता का ह्रास हो गया। पाश्चात्य मूल्यों की आंधी में सब कुछ ध्वंस हो गया। कवि आहत हृदय से कहते हैं:–

''हुआ संकुचित भाई–चारा, उजड़ चले गाँव।
गाँवों तक भी जा पहुँचे पतन के पांव।।
भाई–भाई के पीछे छुरा घोंपता है।
सम्बन्धों के अर्थ बदल गये बदल गया मूल स्वभाव।''[8]

इसी प्रकार से कवि यहाँ मानवीय प्रेम के द्वारा उच्चादर्श प्रस्तुत करता है। हमारा समाज उन्नति के सोपान पर आरूढ़ होता है। विश्व प्रेम का निर्मल झरना नित बहता है। संसार हमारी ओर एकटक देखता है। जब इसके विपरीत आचरण करते हैं तो हम विश्व के अन्य देशों की श्रेणी में सम्मिलित हो जाते हैं। हमारे सपने चूर–चूर हो जाते हैं। अतः मानवीय प्रेम को धारण करके उसके उच्चादर्श स्थापित करना चाहिए।

3. देश प्रेम

भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

देश की विषमताओं और समस्याओं का समाधान एवं देश को उन्नति पथ पर अग्रसर करने वाला ही देश–प्रेम होता है। देश प्रेम का प्याला, पीये कोई मतवाला। कहने का भाव यह है कि देश प्रेम के द्वारा पुनः भारत को सोने की चिड़िया बना सकते हैं। भ्रष्टाचार–अन्याय–अत्याचार एवं बलात्कार की घटनाओं का देश प्रेम के द्वारा ही उन्मूलन किया जा सकता है। अतः प्रो. हरिशंकर आदेश कहते हैं :–

''अकथनीय है गौरव–गरिमा गान सके कोई महिमा।
कोटि–कोटि प्राणों में बसती तेरी रम्य रूप – छवि – प्रतिमा
अनुपमेय अनवद्य अपरिमिति धर्म भूमि जय हे।''[9]

सहृदय कवि अतीत को याद करता हुआ उन महापुरुषों और सन्तों के उच्चादर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है जिन्होंने त्याग तपस्या के द्वारा भारत माता को सदुपदेश के द्वारा सन्मार्ग दर्शाया। स्वदेश की उन्नति के लिए प्राणों को न्यौछावर किया। जिनके ऋण से हमें उऋण होना है। ऐसे महापुरुषों का स्मरण करते हुए कवि कहता है :–

''राम हुये, हनुमान हुये हैं, जहाँ कृष्ण भगवान हुये हैं।
महावीर–गौतम गान्धी ऋषि दयानन्द धीमान हुये हैं।''[10]

जब बीमार भारत की दशा को देखता है तो कवि हृदय चीत्कार करने लगता है। जहाँ पर देवता लोग विचरण करने के लिए लालायित रहते हैं हमारे आजकल के नेताओं ने ऐसे देश की दुर्दशा की है। उससे खिन्न होना स्वाभाविक है। आदर्श पुरुषों की खोज में भटकते हुए कवि कहता है:–

''राम कहाँ कृष्ण कहाँ है?
वर्द्धमान वितृष्ण कहाँ है?
गौतम बुद्ध दयानन्द गान्धी, श्रद्धानन्द सहिष्णु कहाँ हैं?
पटेल, नेहरू लाल बहादुर सुभाष का संदेश कहाँ हैं??[11]

इस समय देश राजनीति के निम्न स्तर पर पहुँच चुका है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की अखण्डता पर फिर आपत्ति आ गई है। राजनेता वोट की खातिर कुछ भी करने को तैयार बैठे हैं। अनाप–शनाप, अनर्गल प्रलाप से अत्यन्त असंवेदनशील स्थिति उत्पन्न हो गई है। राजनेता दलगत राजनीति से ऊपर नहीं उठ पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में कवि हृदय आन्दोलित हो उठता है। वह समाज को तथा राजनेताओं को सन्देश देना चाहता है कि जात–पात, ऊँचनीच के भेदभाव को दूर करके स्वच्छ निर्मल भारत का निर्माण करने के लिए तैयार हों।
कवि प्रेरणा देता है :

''सर्व धर्म का करो समन्वय मध्यम पथ अपनाओ आहत कर जन
श्रद्धा मन्दिर मस्जिद न ढआओ, रोटी–वस्त्र की सुविधा सबके
हेतु जुटाओ, मानवता को बन्धु प्रेम का पट पुनीत पहनाओ
युग–युग का आदेश आज पुनि भारत स्वर्ग बनाओ।''[12]

जब तक सभी देशवासी भारत के प्रेम रस से युक्त न होंगे तब तक सुधार सम्भव नहीं है। उसके लिए शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आवश्यक है। कोरे अंग्रेज पैदा करने से भारत की दशा दयनीय होती चली जायेगी। देश–भक्ति भावना जागृत की जाये। चरित्र निर्माण की ओर ध्यान आवश्यक है। तभी देश प्रेम की भावना पैदा होगी।

4. संस्कृति प्रेम

भारतीय संस्कृति का विश्व भर में सर्वाधिक महत्त्व है। भारत में माता–पिता, आचार्य एवं अतिथिगण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। सारा संसार भारतीय संस्कृति का अनुकरण करने के लिए विवश है। अतः हमारा कर्त्तव्य बनता है कि पाश्चात्य सभ्यता के दोषों को ग्रहण न करें और अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का पूर्ण प्रयत्न करें, जिससे विश्व पटल पर हमारी साख विद्यमान रहे। हम विश्व के लिए प्रेरणा–स्रोत बने रहें। इसके लिए कवि भारतीय संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत करता है:–

''देवता तुल्य होती माता, है पिता देवता माना जाता, आचार्य
देवता के समान, है अतिथि जहाँ पूजा जाता।''[13]

लेकिन ऐसी आशंका बनी हुई है कि भारतीय संस्कृति को पश्चिमी सभ्यता लील न जाये। इसके निराकरण के लिए पाठ्यक्रमों में हमारी संस्कृति को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए। अन्धानुकरण से बचें। देश के सुन्दर एवं सुखद भविष्य के लिए भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी अति आवश्यक है। इसलिए कवि की चिन्ता स्वाभाविक है :–

''भय लगता यूं पश्चिम प्राची को निगल न जाये, भारत की छवि
भारत में लुप्त न हो जाये, कह डलिं नीलाम न संस्कृति युग नये
नवाब।''[14]

5. भाषा प्रेम

मनुष्य अपने आन्तरिक भावों को अपनी मातृभाषा में सम्यक् रूप से अभिव्यक्त कर सकता है। समाज की नब्ज भी मातृभाषा में अन्तर्हित होती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने देश में अंग्रेजी की मोहताज हो रही है। यह बड़ी शर्मिंदगी की बात है। इस प्रकार राष्ट्र के नेताओं के द्वारा हिन्दी भाषा का यह तिरस्कार अत्यन्त निराशाजनक है। अतः आवश्यक है कि अपनी भाषाओं सम्मान करें। हिन्दी भाषा की उपेक्षा के कारण कविवर के हृदय का आंदोलित होना स्वाभाविक है:–

''सकल राष्ट्र की भाषा हिन्दी संविधान की भाषा हिन्दी।
अस्सी प्रतिशत अंग्रेजी संग, बनती आज तमाशा हिन्दी।।''[15]

इस प्रकार से विचारणीय प्रश्न उत्पन्न होता है कि अपनी मातृभाषा को त्याग कर अंग्रेजी दासता हम पर क्यों थोंपी जा रही है। हमारे कर्णधारों को विचार करना चाहिए, जब तक्षशिला विश्वविद्यालय में विदेशों से शिक्षा ग्रहण करने आते थे तब हमारा देश विश्व शिरोमणि था। क्या अंग्रेजी भाषा के कारण था? हमारे देश में संस्कृत में असीम ज्ञान भण्डार भरा पड़ा है। विदेशी यहीं से ज्ञान प्राप्त करके

गये हैं आज उस संस्कृत भाषा की उपेक्षा क्यों है?

इस प्रकार से कवि के काव्य में प्रकृति प्रेम का सुन्दर चित्रण किया है। हिमालय आदिकाल से हमारा प्रहरी रहा है। अनेक प्रकार के फल हमारी प्रकृति की शोभा को बढ़ा रहे हैं। गंगा–यमुना नदियाँ हमको धन–धान्य से पूर्ण कर रही हैं।

कवि ने मानवीय प्रेम का सटीक वर्णन किया है जिससे समाज एकसूत्र में बन्धा रहता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की कामना करता है। देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत कविवर ने उद्‌गारों को प्रकट किया है। संस्कृति प्रेम में माता–पिता, आचार्य व अतिथि को अत्यधिक आदर दिया जाता है। कवि का भाषा प्रेम भी अनूठा है। कवि के काव्य में अविरल मानवीय प्रेम की भावधारा प्रवाहित है। इस प्रकार से कवि के वैविध्यपूर्ण प्रेमाभिव्यक्ति से कृति को स्वरूप मिला है। राष्ट्रीय भावना से युक्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि (भाग एक), पृ. 27।
2. प्रो. हरिशंकर (आदेश), प्रवासी की पाती, पृ.27।
3. वही, पृ. 47।
4. वही, पृ. 34।
5. वही, पृ. 83।
6. वही, पृ. 78।
7. वही, पृ. 49।
8. वही, पृ. 51।
9. वही, पृ. 15, 16।
10. वही, पृ. 19।
11. वही, पृ. 38।
12. वही, पृ. 109।
13. वही, पृ. 42।
14. वही, पृ. 52।
15. वही, पृ. 39।